● लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

—गोस्वामी तुलसीदास

(ख) लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

प्रतिपाद्य–यह अंश 'रामचरितमानस' के लंकाकांड से लिया गया है जब लक्ष्मण शक्ति-बाण लगने से मूर्च्छित हो जाते हैं। भाई के शोक में विगलित राम का विलाप धीरे-धीरे प्रलाप में बदल जाता है जिसमें लक्ष्मण के प्रति राम के अंतर में छिपे प्रेम के कई कोण सहसा अनावृत्त हो जाते हैं। यह प्रसंग ईश्वरीय राम का पूरी तरह से मानवीकरण कर देता है, जिससे पाठक का काव्य-मर्म से सीधे जुड़ाव हो जाता है। इस घने शोक-परिवेश में हनुमान का संजीवनी लेकर आ जाना कवि को करुण रस के बीच वीर रस के उदय के रूप में दिखता है।

सार–युद्ध में लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम की सेना में हाहाकार मच गया। सब वानर सेनापति इकट्ठे हुए तथा लक्ष्मण को बचाने के उपाय सोचने लगे। सुषेण वैद्य के परामर्श पर हनुमान हिमालय से संजीवनी बूटी लाने के लिए चल पड़े। लक्ष्मण को गोद में लिटाकर राम व्याकुलता से हनुमान की प्रतीक्षा करने लगे। आधी रात बीत जाने के बाद राम अत्यधिक व्याकुल हो गए। वे विलाप करने लगे कि तुम मुझे कभी भी दुखी नहीं देख पाते थे। मेरे लिए ही तुमने वनवास स्वीकार किया। अब वह प्रेम मुझसे कौन करेगा? यदि मुझे तुम्हारे वियोग का पता होता तो मैं तुम्हें कभी साथ नहीं लाता। संसार में सब कुछ दुबारा मिल सकता है, परंतु सहोदर भाई नहीं। तुम्हारे बिना मेरा जीवन पंखरहित पक्षी के समान है। अयोध्या जाकर मैं क्या ज़वाब दूँगा? लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए भाई को गँवा आया। तुम्हारी माँ को मैं क्या ज़वाब दूँगा? तभी हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आए। वैद्य ने दवा बनाकर लक्ष्मण को पिलाई और उनकी मूर्च्छा ठीक हो गई। राम ने उन्हें गले से लगा लिया। वानर सेना में उत्साह आ गया। रावण को यह समाचार मिला तो उसने परेशान होकर कुंभकरण को उठाया। कुंभकरण ने जगाने का कारण पूछा तो रावण ने सीता के हरण से युद्ध तक की सारी बात बताई तथा बड़े-बड़े वीरों के मारे जाने की बात कही। कुंभकरण ने रावण को बुरा-भला कहा और कहा कि तुमने साक्षात ईश्वर से वैर लिया है और अब अपना कल्याण चाहते हो! राम साक्षात हरि तथा सीता जी जगदंबा हैं। उनसे वैर लेना कभी कल्याणकारी नहीं हो सकता।

दोहा

तव प्रताप उर राखि प्रभु, जैहउँ नाथ तुरंत।
अस कहि आयसु पाइ पद, बंदि चलेउ हनुमंत।।

भरत बाहु बल सील गुन, प्रभु पद प्रीति अपार।
मन महुँ जात सराहत, पुनि-पुनि पवनकुमार।।

(पृष्ठ–49)

शब्दार्थ–*तव*—तुम्हारा, आपका। *प्रताप*—यश। *उर*—हृदय। *राखि*—रखकर। *जैहऊँ*—जाऊँगा। *नाथ*—स्वामी। *अस*—इस तरह। *आयसु*—आज्ञा। *पाइ*—पाकर। *पद*—चरण, पैर। *बंदि*—वंदना करके। *बाहु*—भुजा। *सील*—सद्व्यवहार। *गुन*—गुण। *प्रीति*—प्रेम। *अपार*—अधिक। *महुँ*—में। *सराहत*—बड़ाई करते हुए। *पुनि-पुनि*—फिर-फिर। *पवनकुमार*—हनुमान।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित '**लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप**' प्रसंग से उद्धृत है। यह प्रसंग रामचरितमानस के **लंकाकांड** से लिया गया है। इसके रचयिता कवि **तुलसीदास** हैं। इस प्रसंग में लक्ष्मण के मूर्च्छित होने तथा हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाने में भरत से मुलाकात का वर्णन किया गया है।

व्याख्या–हे नाथ! हे प्रभो!! मैं आपका प्रताप हृदय में रखकर तुरंत यानी समय से वहाँ पहुँच जाऊँगा। ऐसा कहकर और भरत जी से आज्ञा लेकर एवं उनके चरणों की वंदना करके हनुमान जी चल दिए।

भरत के बाहुबल, शील स्वभाव तथा प्रभु के चरणों में उनकी अपार भक्ति को मन में बार-बार सराहते हुए हनुमान संजीवनी बूटी लेकर लंका की तरफ चले जा रहे थे।

विशेष–(*i*) हनुमान की भक्ति व भरत के गुणों का वर्णन हुआ है।

(*ii*) दोहा छंद है।

(*iii*) अवधी भाषा का प्रयोग है।

(*iv*) 'मन महुँ', 'पुनि-पुनि पवन कुमार', 'पाइ पद' में अनुप्रास तथा 'पुनि-पुनि' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न (क) *हनुमान ने भरत जी को क्या आश्वासन दिया?*

(ख) *हनुमान भरत की किस बात से प्रभावित हुए?*

(ग) *हनुमान ने संकट में धैर्य नहीं खोया। वे वीर एवं धैर्यवान थे-स्पष्ट कीजिए।*

उत्तर (क) हनुमान जी ने भरत जी को यह आश्वासन दिया कि "हे नाथ! मैं आपका प्रताप हृदय में रखकर तुरंत संजीवनी बूटी लेकर लंका पहुँच जाऊँगा। आप निश्चिंत रहिए।"

(ख) हनुमान भरत की रामभक्ति, शीतल स्वभाव व बाहुबल से प्रभावित हुए।

(ग) मेघनाथ का बाण लगने से लक्ष्मण घायल व मूर्च्छित हो गए थे। इससे श्रीराम सहित पूरी वानर सेना शोकाकुल होकर विलाप कर रही थी। ऐसे में हनुमान ने विलाप करने की जगह धैर्य बनाए रखा और संजीवनी लेने गए। इससे स्पष्ट होता है कि हनुमान वीर एवं धैर्यवान थे।

2. *उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी।।*
अर्ध राति गई कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायउ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।। [*CBSE (Delhi), 2011*]
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू।।

(पृष्ठ-49-50) [*CBSE (Delhi), 2009, 2012*]

शब्दार्थ–*उहाँ*—वहाँ। *लछिमनहि*—लक्ष्मण को। *निहारी*—देखा। *मनुज*—मनुष्य। *अनुसारी*—समान। *अर्ध*—आधी। *राति*—रात। *कपि*—बंदर (हनुमान)। *आयउ*—आया। *अनुज*—छोटा भाई, लक्ष्मण। *उर*—हृदय। *सकहु*—सके। *दुखित*—दुखी। *मोहि*—मुझे। *काऊ*—किसी प्रकार। *तव*—तेरा। *मृदुल*—कोमल। *सुभाऊ*—स्वभाव। *मम*—मेरे। *हित*—भला। *तजेहु*—त्याग दिया। *सहेहु*—सहन किया। *बिपिन*—जंगल। *हिम*—बर्फ। *आतप*—धूप। *बाता*—हवा, तूफान। *सो*—वह। *अनुराग*—प्रेम। *बच*—वचन। *बिकलाई*—व्याकुल। *जौं*—यदि। *जनतेउँ*—जानता। *बिछोहू*—बिछड़ना, वियोग। *मनतेउँ*—मानता। *ओहू*—उस।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित '**लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप**' प्रसंग से उद्धृत है। यह प्रसंग रामचरितमानस के **लंकाकांड** से लिया गया है। इसके रचयिता कवि **तुलसीदास** हैं। इस प्रसंग में लक्ष्मण-मूर्च्छा पर राम के करुण विलाप का वर्णन किया गया है।

व्याख्या–लक्ष्मण को निहारते हुए श्रीराम सामान्य आदमी के समान विलाप करते हुए कहने लगे कि आधी रात बीत गई है। अभी तक हनुमान नहीं आए। उन्होंने लक्ष्मण को उठाकर सीने से लगाया। वे बोले कि "तुम मुझे कभी दुखी नहीं देख पाते थे। तुम्हारा स्वभाव सदैव कोमल व विनम्र रहा। मेरे लिए ही तुमने माता-पिता को त्याग दिया और जंगल में ठंड, धूप, तूफ़ान आदि को सहन किया। हे भाई! अब वह प्रेम कहाँ है? तुम मेरी व्याकुलतापूर्ण बातों को सुनकर उठते क्यों नहीं। यदि मैं यह जानता होता कि वन में तुम्हारा वियोग सहना पड़ेगा तो मैं पिता के वचनों को भी नहीं मानता और वन में नहीं आता।

विशेष–(*i*) राम का मानवीय रूप एवं उनके विलाप का मार्मिक वर्णन है।

(*ii*) दृश्य बिंब है।

(*iii*) करुण रस की प्रधानता है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न (क) *राम ने लक्ष्मण की किन-किन विशेषताओं को बताया ?*

(ख) *लक्ष्मण ने राम के लिए क्या-क्या कष्ट सहे ?*

(ग) *'सो अनुराग' कहकर राम कैसे अनुराग की दुर्लभता की ओर संकेत कर रहे हैं ? सोदाहरण लिखिए।*

उत्तर (क) राम ने लक्ष्मण की निम्नलिखित विशेषताएँ बताईं–

(*i*) वे राम को दुखी नहीं देख सकते थे।

(*ii*) उनका स्वभाव कोमल था।

(*iii*) उन्होंने माता-पिता को छोड़कर उनके लिए वन के कष्ट सहे।

(ख) लक्ष्मण ने राम के लिए अपने माता-पिता को ही नहीं, अयोध्या का सुख-वैभव त्याग दिया। वे वन में राम के साथ रहकर नाना प्रकार की मुसीबतें सहते रहे।

(ग) 'सो अनुराग' कहकर राम ने अपने और लक्ष्मण के बीच स्नेह की तरफ संकेत किया है। ऐसा प्रेम दुर्लभ होता है कि भाई के लिए दूसरा भाई अपने सब सुख त्याग देता है। राम भी लक्ष्मण की मूर्च्छा मात्र से व्याकुल हो जाते हैं।

3. *सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।*
अस बिचारि जिय जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।
जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई।।
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

(पृष्ठ–50) [*CBSE (Delhi & Foreign), 2011; (Outside), 2009*]

शब्दार्थ–***बित***—धन। ***नारि***–स्त्री, पत्नी। ***होहिं***–आते हैं। ***जाहिं***—जाते हैं। ***जग***—संसार। ***बारहिं बारा***—बार-बार। ***अस***—ऐसा, इस तरह। ***बिचारि***—सोचकर। ***जिय***—मन में। ***ताता***—भाई के लिए संबोधन। ***सहोदर***—एक ही माँ की कोख से जन्मे। ***भ्राता***—भाई। ***जथा***—जिस प्रकार। ***बिनु***—के बिना। ***दीना***—दीन-हीन। ***मनि***—नागमणि। ***फनि***—फन (यहाँ-साँप)। ***करिबर***—श्रेष्ठ हाथी। ***कर***—सूँड़। ***हीना***—से रहित। ***मम***—मेरा। ***जिवन***—जीवन। ***बंधु***—भाई। ***तोही***—तुम्हारे। ***जौं***—यदि। ***जड़***—कठोर। ***दैव***—भाग्य। ***जिआवै***—जीवित रखे। ***मोही***—मुझे। ***जैहउँ***—जाऊँगा। ***कवन***—कौन। ***मुहुँ***—मुख। ***हेतु***—के लिए। ***गँवाई***—खोकर। ***बरु***—चाहे। ***अपजस***—अपयश। ***सहतेउँ***—सहन करता। ***माहीं***—में। ***बिसेष***—खास। ***छति***—हानि, नुकसान।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **'आरोह, भाग-2'** में संकलित **'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप'** प्रसंग से उद्धृत है। यह प्रसंग रामचरितमानस के **लंकाकांड** से लिया गया है। इसके रचयिता **तुलसीदास** हैं। इस प्रसंग में लक्ष्मण-मूर्च्छा पर राम के विलाप का वर्णन है।

व्याख्या–श्रीराम व्याकुल होकर कहते हैं कि संसार में पुत्र, धन, स्त्री, भवन और परिवार बार-बार मिल जाते हैं और नष्ट हो जाते हैं, किंतु संसार में सगा भाई दुबारा नहीं मिलता। यह विचार करके, हे तात, तुम जाग जाओ।

हे लक्ष्मण! जिस प्रकार पंख के बिना पक्षी, मणि के बिना साँप, सूँड़ के बिना हाथी अत्यंत दीन-हीन हो जाते हैं, उसी प्रकार तुम्हारे बिना मेरा जीवन व्यर्थ है। हे भाई! तुम्हारे बिना यदि भाग्य मुझे जीवित रखेगा तो मेरा जीवन भी पंखविहीन पक्षी, मणि विहीन साँप और सूँड़ विहीन हाथी के समान हो जाएगा। राम चिंता करते हैं कि वे कौन-सा मुँह लेकर अयोध्या जाएँगे ? लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो दिया। मैं पत्नी के खोने का अपयश सहन कर लेता, क्योंकि नारी की हानि विशेष नहीं होती।

विशेष– (*i*) राम का भ्रातृ-प्रेम प्रशंसनीय है।

(*ii*) दृश्य बिंब है।

(*iii*) 'जथा पंख ..... तोही' में उदाहरण अलंकार है।

(*iv*) चौपाई छंद का सुंदर प्रयोग है।

(*v*) अवधी भाषा है।

(*vi*) करुण रस है।

(*vii*) निम्नलिखित में अनुप्रास अलंकार की छटा है–
'जाहिं जग', 'बारहिं बारा', 'बंधु बिनु', 'करिबर कर'।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर—

प्रश्न **(क)** *काव्यांश के आधार पर राम के व्यक्तित्व पर टिप्पणी कीजिए।*

(ख) *राम ने भ्रातृ-प्रेम की तुलना में किनको हीन माना है?*

(ग) *राम को लक्ष्मण के बिना अपना जीवन कैसा लगता है?*

उत्तर **(क)** इस काव्यांश में राम का आम आदमी वाला रूप दिखाई देता है। ये लक्ष्मण के प्रति स्नेह व प्रेमभाव को व्यक्त करते हैं तथा संसार के हर सुख से ज्यादा सगे भाई को महत्त्व देते हैं।

(ख) राम ने भ्रातृ-प्रेम की तुलना में पुत्र, धन, स्त्री, घर और परिवार सबको हीन माना है। उनके अनुसार, ये सभी चीज़ें आती-जाती रहती हैं, परंतु सगा भाई बार-बार नहीं मिलता।

(ग) राम को लक्ष्मण के बिना अपना जीवन उतना ही हीन लगता है जितना पंख के बिना पक्षी, मणि के बिना साँप तथा सूँड के बिना हाथी का जीवन हीन होता है।

4. *अब अपलोकु सोकु सुत तोरा। सहहि निठुर कठोर उर मोरा।।*
निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम्ह प्रान अधारा।।
सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी। सब बिधि सुखद परम हित जानी।।
उतरु काह दैहउँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई।।
बहु बिधि सोचत सोच बिमोचन। स्रवत सलिल राजिव दल लोचन।।
उमा एक अखंड रघुराई। नर गति भगत कृपालु देखाई।।

[*CBSE (Delhi) (C) & Foreign, 2009; (Outside), 2011*]

सोरठा

प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर।
आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना मँह बीर रस।।

(पृष्ठ–50) [*CBSE (Outside), 2011*]

शब्दार्थ—***अपलोकु***—अपयश। ***सहहि***—सहन कर लेगा। ***निठुर***—कठोर। ***उर***—हृदय। ***निज***—अपनी। ***जननी***—माँ। ***कुमारा***—पुत्र। ***तात***—पिता। ***तासु***—उसके। ***प्रान अधारा***—प्राणों के आधार। ***सौंपेसि***—सौंपा था। ***मोहि***—मुझे। ***गहि***—पकड़कर। ***पानी***—हाथ। ***हित***—हितैषी। ***जानी***—जानकर। ***उतरु***—उत्तर। ***काह***—क्या। ***तेहि***—उसे। ***किन***—क्यों नहीं। ***स्रवत***—चूता है। ***सलिल***—जल। ***राजिव***—कमल। ***गति***—दशा। ***प्रलाप***—तर्कहीन वचन-प्रवाह। ***बिकल***—परेशान। ***निकर***—समूह। ***जिमि***—जैसे। ***मँह***—में।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित '**लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप**' प्रसंग से उद्धृत है। यह प्रसंग रामचरितमानस के **लंका कांड** से लिया गया है। इसके रचयिता **तुलसीदास** हैं। इस प्रसंग में लक्ष्मण-मूर्च्छा पर राम के विलाप व हनुमान के वापस आने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—लक्ष्मण के होश में न आने पर राम विलाप करते हुए कहते हैं कि मेरा निष्ठुर व कठोर हृदय अपयश और तुम्हारा शोक दोनों को सहन करेगा। हे तात! तुम अपनी माता के एक ही पुत्र हो तथा उसके प्राणों के आधार हो। उसने सब प्रकार से सुख देने वाला तथा परम हितकारी जानकर ही तुम्हें मुझे सौंपा था। अब उन्हें मैं क्या उत्तर दूँगा? तुम स्वयं उठकर मुझे कुछ बताओ। इस प्रकार राम ने अनेक प्रकार से विचार किया और उनके कमल रूपी सुंदर नेत्रों से आँसू बहने लगे। शिवजी कहते हैं—हे उमा! श्री रामचंद्र जी अद्वितीय और अखंड हैं। भक्तों पर कृपा करने वाले भगवान ने मनुष्य की दशा दिखाई है। प्रभु का विलाप सुनकर वानरों के समूह व्याकुल हो गए। इतने में हनुमान जी आ गए। ऐसा लगा जैसे करुण रस में वीर रस प्रकट हो गया हो।

विशेष—(*i*) राम की व्याकुलता का सजीव वर्णन है।

(*ii*) दृश्य बिंब है।

(*iii*) अवधी भाषा का सुंदर प्रयोग है।

(*iv*) चौपाई व सोरठा छंद हैं।

(*v*) करुण रस है।

(*vi*) निम्नलिखित में अनुप्रास अलंकार की छटा है—
'तात तासु तुम्ह', 'बहु विधि', 'सोचत सोच', 'स्रवत सलिल', 'प्रभु प्रताप'।

(*vii*) 'राजिव दल लोचन' में रूपक अलंकार है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर—

प्रश्न **(क)** *व्याकुल श्रीराम अपना दुख कैसे प्रकट कर रहे हैं?*

(ख) *श्रीराम सुमित्रा माता का स्मरण करके क्यों दुखी हो उठते हैं?*

(ग) *'नर गति भगत कृपालु देखाई'— पंक्ति का आशय बताइए।*

उत्तर (क) व्याकुल श्रीराम आपना दुख प्रकट करते हुए कहते हैं कि वे कठोर हृदय से लक्ष्मण के वियोग व अपयश को सहन कर लेंगे, परंतु अयोध्या में सुमित्रा माता को क्या जवाब देंगे।

(ख) श्रीराम सुमित्रा माता के विषय में चिंतित हैं, क्योंकि उन्होंने राम को हर तरह से हितैषी मानकर लक्ष्मण को उन्हें सौंपा था। अत: वे उन्हें लक्ष्मण की मृत्यु का जवाब कैसे देंगे। वे लक्ष्मण से ही इसका जवाब पूछ रहे हैं।

(ग) इसका अर्थ यह है कि राम ने मानवरूप में जन्म लिया। उन्हें धरती पर होने वाली हर घटना का पूर्व ज्ञान है, परंतु वे लक्ष्मण-मूर्च्छा पर साधारण मानव की तरह व्यवहार कर रहे हैं।

5. *हरषि राम भेंटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना।।*
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई।।
हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता।।
कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा।। (पृष्ठ–50)

शब्दार्थ–***हरषि***—खुश होकर। ***भेंटेउ***—गले लगाकर प्रेम प्रकट किया। ***अति***—बहुत अधिक। ***कृतग्य***—आभार। ***सुजाना***—अच्छा ज्ञानी, समझदार। ***बैद***—वैद्य। ***कीन्हि***—किया। ***भ्राता***—भाई। ***हरषे***—खुश हुए। ***सकल***—समस्त। ***ब्राता***—समूह, झुंड। ***पुनि***—दुबारा। ***ताहि***—उसको। ***लइ आवा***—लेकर आए थे।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित '**लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप**' प्रसंग से उद्धृत है। यह प्रसंग रामचरितमानस के **लंकाकांड** से लिया गया है। इसके रचयिता **तुलसीदास** हैं। इस प्रसंग में लक्ष्मण के स्वस्थ होकर उठने तथा सभी की प्रसन्नता का वर्णन है।

व्याख्या–हनुमान के आने पर राम ने प्रसन्न होकर उन्हें गले से लगा लिया। परम चतुर और एक समझदार व्यक्ति की तरह भगवान राम ने हनुमान के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। वैद्य ने शीघ्र ही उपचार किया जिससे लक्ष्मण उठकर बैठ गए और बहुत प्रसन्न हुए। लक्ष्मण को राम ने गले से लगाया। इस दृश्य को देखकर भालुओं और वानरों के समूह में खुशी छा गई। हनुमान ने वैद्यराज को वहीं उसी तरह पहुँचा दिया जहाँ से वे उन्हें लेकर आए थे।

विशेष– (*i*) लक्ष्मण के ठीक होने पर वानर सेना व राम की खुशी का वर्णन है।

(*ii*) अवधी भाषा है।

(*iii*) चौपाई छंद है।

(*iv*) 'प्रभु परम', 'तबहिं ताहि में'।

(*v*) घटना क्रम में तीव्रता है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न (क) *हनुमान के आने पर राम ने क्या प्रतिक्रिया जताई?*

(ख) *लक्ष्मण की मूर्च्छा किस तरह टूटी?*

(ग) *किस घटना से वानर सेना प्रसन्न हुई?*

उत्तर (क) हनुमान के आने पर राम प्रसन्न हो गए तथा उन्हें गले से लगाया। उन्होंने हनुमान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

(ख) सुषेण वैद्य ने संजीवनी बूटी से लक्ष्मण का उपचार किया। परिणामस्वरूप उनकी मूर्च्छा टूटी और लक्ष्मण हँसते हुए उठ बैठे।

(ग) लक्ष्मण के ठीक होने पर प्रभु राम ने उन्हें गले से लगा लिया। इस दृश्य को देखकर सभी बंदर, भालू व हनुमान प्रसन्न हो गए।

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. *भरत बाहु बल सील गुन, प्रभु पद प्रीति अपार।*
मन महुँ जात सराहत, पुनि-पुनि पवनकुमार।। [*CBSE (Delhi), 2013*]

(क) *अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण चुनकर लिखिए।*
(ख) *कविता के भाषिक सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।*
(ग) *काव्यांश के भाव-वैशिष्ट्य को स्पष्ट कीजिए।*

उत्तर (क) अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण–
(*i*) प्रभु पद प्रीति अपार। (*ii*) पुनि-पुनि पवनकुमार।

(ख) काव्यांश में सरस, सरल अवधी भाषा का प्रयोग है। इसमें दोहा छंद का प्रयोग है।

(ग) काव्यांश में हनुमान द्वारा भरत के बाहुबल, शील-स्वभाव तथा प्रभु श्री राम के चरणों में उनकी अपार भक्ति की सराहना का वर्णन है।

2. *सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।*
अस बिचारि जिय जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।
जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई।।
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

प्रश्न **(क)** *काव्यांश के भाव-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।*
(ख) *इन पंक्तियों को पढ़कर राम-लक्ष्मण की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है?*
(ग) *अंतिम दो पंक्तियों को पढ़कर हमें क्या सीख मिलती है?*

उत्तर (क) विष्णु भगवान के अवतार भगवान श्री राम का मनुष्य के समान व्याकुल होना और राम, लक्ष्मण एवं भरत का यह परस्पर भ्रातृ-प्रेम हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है।

(ख) दोनों भाइयों में अगाध प्रेम था। श्री राम अनुज से बहुत लगाव रखते थे तथा दोनों के बीच पिता-पुत्र-सा संबंध था। लक्ष्मण श्री राम का बहुत सम्मान करते थे।

(ग) भगवान श्री राम के अनुसार संसार के सब सुख भाई पर न्यौछावर किए जा सकते हैं। भाई के अभाव में जीवन व्यर्थ है और भाई जैसा कोई हो ही नहीं सकता। आज के युग में यह सीख अनेक सामाजिक कष्टों से मुक्त करवा सकती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. *'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' काव्यांश के आधार पर भ्रातृशोक में बेचैन राम की दशा को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।*

अथवा

'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। [*CBSE (Outside), 2008*]

उत्तर लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम भाव-विह्वल हो उठते हैं। वे आम व्यक्ति की तरह विलाप करने लगते हैं। वे लक्ष्मण को अपने साथ लाने के निर्णय पर भी पछताते हैं। वे लक्ष्मण के गुणों को याद करके रोते हैं। वे कहते हैं कि पुत्र, नारी,

धन, परिवार आदि तो संसार में बार-बार मिल जाते हैं, किंतु लक्ष्मण जैसा भाई दुबारा नहीं मिल सकता। लक्ष्मण के बिना वे स्वयं को पंख कटे पक्षी के समान असहाय, मणिरहित साँप के समान तेजरहित तथा सूँड़रहित हाथी के समान असक्षम मानते हैं। वे इस चिंता में थे कि अयोध्या में सुमित्रा माँ को क्या जवाब देंगे तथा लोगों का उपहास कैसे सुनेंगे कि पत्नी के लिए भाई को खो दिया।

2. *बेकारी की समस्या तुलसी के जमाने में भी थी, उस बेकारी का वर्णन तुलसी के कवित्त के आधार पर कीजिए।*

अथवा

तुलसी ने अपने युग की जिस दुर्दशा का चित्रण किया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर तुलसीदास के युग में जनसामान्य के पास आजीविका के साधन नहीं थे। किसान की खेती चौपट रहती थी। भिखारी को भीख नहीं मिलती थी। दान-कार्य भी बंद ही था। व्यापारी का व्यापार ठप्प था। नौकरी भी लोगों को नहीं मिलती थी। चारों तरफ बेरोज़गारी थी। लोगों को समझ में नहीं आता था कि वे कहाँ जाएँ, क्या करें?

3. *तुलसी के समय के समाज के बारे में बताइए।*

उत्तर तुलसीदास के समय का समाज मध्ययुगीन विचारधारा का था। उस समय बेरोज़गारी थी तथा आम व्यक्ति की हालत दयनीय थी। समाज में कोई नियम-कानून नहीं था। व्यक्ति अपनी भूख शांत करने के लिए गलत कार्य भी करते थे। धार्मिक कट्टरता व्याप्त थी। जाति व संप्रदाय के बंधन कठोर थे। नारी की दशा हीन थी। उसकी हानि को विशेष नहीं माना जाता था।

4. *तुलसी युग की आर्थिक स्थिति का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।*

उत्तर तुलसी के समय आर्थिक दशा खराब थी। किसान के पास खेती न थी, व्यापारी के पास व्यापार नहीं था। यहाँ तक कि भिखारी को भीख भी नहीं मिलती थी। लोग यही सोचते रहते थे कि क्या करें, कहाँ जाएँ? वे धन-प्राप्ति के उपायों के बारे में सोचते थे। वे अपनी संतानों तक को बेच देते थे। भुखमरी का साम्राज्य फैला हुआ था।

5. *लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम क्या सोचने लगे?*

उत्तर लक्ष्मण शक्तिबाण लगने से मूर्च्छित हो गए। यह देखकर राम भावुक हो गए तथा सोचने लगे कि पत्नी के बाद अब भाई को खोने जा रहे हैं। केवल एक स्त्री के कारण मेरा भाई आज मृत्यु की गोद में जा रहा है। यदि स्त्री खो जाए तो कोई बड़ी हानि नहीं होगी, परंतु भाई के खो जाने का कलंक जीवनभर मेरे माथे पर रहेगा। वे सामाजिक अपयश से घबरा रहे थे।

6. *क्या तुलसी युग की समस्याएँ वर्तमान में समाज में भी विद्यमान हैं? अपने शब्दों में लिखिए।*

उत्तर तुलसी ने लगभग 500 वर्ष पहले जो कुछ कहा था, वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने अपने समय की मूल्यहीनता, नारी की स्थिति, आर्थिक दुरवस्था का चित्रण किया है। इनमें अधिकतर समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं। आज भी लोग जीवन-निर्वाह के लिए गलत-सही कार्य करते हैं। नारी के प्रति नकारात्मक सोच आज भी विद्यमान है। अभी भी जाति व धर्म के नाम पर भेदभाव होता है। इसके विपरीत, कृषि, वाणिज्य, रोज़गार की स्थिति आदि में बहुत बदलाव आया है। इसके बाद भी तुलसी युग की अनेक समस्याएँ आज भी हमारे समाज में विद्यमान हैं।

7. *कुंभकरण ने रावण को किस सच्चाई का आईना दिखाया?*

उत्तर कुंभकरण रावण का भाई था। वह लंबे समय तक सोता रहता था। उसका शरीर विशाल था। देखने में ऐसा लगता था मानो काल आकर बैठ गया हो। वह मुँहफट तथा स्पष्ट वक्ता था। वह रावण से पूछता है कि तुम्हारे मुँह क्यों सूखे हुए हैं? रावण की बात सुनने पर वह रावण को फटकार लगाता है तथा उसे कहता है कि अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। इस प्रकार उसने रावण को उसके विनाश संबंधी सच्चाई का आईना दिखाया।

8. *नीचे लिखे काव्य-खंड को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :* [*CBSE (Delhi), 2014*]

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस विचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।

(क) *काव्यांश में प्रयुक्त भाषा एवं छंद का नाम लिखिए।*
(ख) *प्रयुक्त अलंकार का नाम और दो उदाहरण लिखिए।*
(ग) *कविता का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*

उत्तर (क) काव्यांश में प्रयुक्त भाषा सरस, सरल अवधी तथा छंद चौपाई है।
(ख) काव्यांश में अनुप्रास अलंकार है। इसके दो उदाहरण हैं–
(*i*) होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।
(*ii*) अस विचारि जिय जागहु ताता।

(ग) काव्यांश में लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम की व्याकुलता एवं दुख का वर्णन है। वे जगत में सहोदर भाई फिर न मिल पाने की बात कहकर उठ जाने के लिए कह रहे हैं।

9. *कुंभकरण के द्वारा पूछे जाने पर रावण ने अपनी व्याकुलता के बारे में क्या कहा और कुंभकरण से क्या सुनना पड़ा?* *[CBSE (Delhi), 2015]*

उत्तर कुंभकरण के पूछने पर रावण ने उसे अपनी व्याकुलता के बारे में विस्तारपूर्वक बताया कि किस तरह उसने माता सीता का हरण किया। फिर उसने बताया कि हनुमान ने सब राक्षस मार डाले हैं और महान योद्धाओं का संहार कर दिया है।

उसकी ऐसी बातें सुनकर कुंभकरण ने उससे कहा कि अरे मूर्ख! जगत-जननी को चुराकर अब तू कल्याण चाहता है। यह संभव नहीं है।